बैगा जनजाति के प्रमुख तीज त्यौहार एवं बदलते प्रतिमान का एक नृजातीय अध्ययन | (कबीरधाम एवं मुंगेली जिला के विशेष संदर्भ में)

डॉ.रश्मि कुजूर [1] | डॉ संजय कुमार सिंह [2] | डॉ.एन.कुजूर [3] | चम्पा साहू [4]

1 सहायक प्राध्यापक शास.प.श्यामाचरण शुक्ल महाविद्यालय धरसींवा रायपुर, छत्तीसगढ़.

2 सहायक प्राध्यापक शास.प.श्यामाचरण शुक्ल महाविद्यालय धरसींवा रायपुर, छत्तीसगढ़.

3 प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष समाजशास्त्र एवं समाजकार्य अध्ययन शाला प.रविशंकर शुक्ल वि.वि. रायपुर (छ.ग.)

4 शोधार्थी समाजशास्त्र एवं समाज कार्य अध्ययन शाला पं.रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर, छत्तीसगढ़.

ABSTRACT:

प्रस्तुत शोध अध्ययन छत्तीसगढ़ राज्य के विशेष पिछड़ी जनजाति बैगा के प्रमुख तीज-त्यौहार एवं बदलते प्रतिमान का एक नृजातीय अध्ययन पर आधारित है| जिसके अंतर्गत बैगा जनजाति की प्रमुख पारंपरिक सांस्कृतिक तीज-त्योहारों का अध्ययन कर उसमें होने वाले वर्तमान परिवर्तन को भी दर्शाया गया है | प्रस्तुत अध्ययन कबीरधाम एवं मुंगेली ज़िले के बोड़ला एवं लोरमी विकासखण्ड के बैगा निवासरत गाँव बोदलपानी,सोनवाही,टिंगीपुर,एवं सुरहीगाँव के अध्ययन पर आधारित है | अध्ययन में तथ्य संकलन हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक तथ्यों का संकलन किया गया है प्राथमिक तथ्य संकलन हेतु साक्षात्कार निर्देशिका ,डायरी ,समूह वार्ता तथा द्वितीयक तथ्यों के संकलन हेतु विभिन्न पूर्व में किये गये शोध पत्र-पत्रिकाए ,पुस्तक एवं इंटरनेट का उपयोग किया गया है | शोध अध्ययन से प्राप्त जानकारी के अनुसार बैगा जनजाति विभिन्न सांस्कृतिक तीज-त्योहारों जैसे,बिदरी,छेरता,फाग,छाया ढरना,नवाखाई (धान नवाखाई ,मक्का नवाखाई ,भाजी नवाखाई) आठ साल नौ कार्तिक आदि पारंपरिक पर्वो का आयोजन करते है,जिसमें कुछ आंशिक परिवर्तन भी दिखाई दे रहा है जो इनके जीवन में विशेष महत्त्व रखते है |

KEYWORDS:

बैगा जनजाति , प्रमुख सांस्कृतिक तीज-त्यौहार एवं परिवर्तन ।

प्रस्तावना:-

Kaufmann, W. (1941). Folk-Songs of the Gond and Baiga. The Musical Quarterly 1 में बैगा जनजाति को मध्य भारत की जनजाति बताया है जिसका निवास स्थान सतपुड़ा पर्वत के पूर्वी छोर मैकाल श्रेणी है बैगा जनजाति देश के मुल निवासी है जो आक्रमणकारियों के भय के कारण पहाड़ो एवं जंगलो में शरण ले लिया | वर्तमान में बैगा जनजाति अपनी सभी प्राचीन आदतों को बरकरार रखते हुए हिन्दू धर्म को अपना लिया है लेकिन अपनी प्राचीन रीति-रिवाजों को संरक्षित रखे हुए है | वर्तमान में बैगा जनजाति भारत देश के विभिन्न राज्यों मध्य प्रदेश, बिहार, झारखण्ड, पश्चिम बंगाल, एवं छत्तीसगढ़ में निवास करते है ,जो एक अत्यंत पिछड़ी एवं विलुप्तप्राय जनजाति है | एल्विन 2 ने अपने अध्ययन में बताया कि छत्तीसगढ़ में बैगा जनजाति सबसे पहले छोटा नागपुर के रास्ते से प्रवेश किया जो वर्त्तमान में छत्तीसगढ़ राज्य के विभिन्न जिलो कबीरधाम, मुंगेली, बिलासपुर, गौरेलापेंड्रामारवाही, राजनांदगांव, कोरिया, आदि क्षेत्रो में निवास करती है | बैगा आधुनिकता से दूर दुर्गम स्थनों जंगलो पहाड़ो में निवास करती है जो संस्कृति रूप से समृद्ध मानी जाती है जिनकी जीवन शैली संस्कार, कला, परम्परा एवं तीज-त्योंहारो, नीति नियम आदि अलग विशिष्ट होते हैं | जो बैगा जनजाति को एक अलग पहचान दिलाती है | प्रत्येक समाज का अपना एक सांस्कृतिक पक्ष होता है जिसके द्वारा हम किसी भी समाज को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं, और इन्ही सांस्कृतिक पक्षों का एक विशिष्ट अंग होता है तीज –त्यौहार | सांस्कृतिक पक्ष किसी भी समाज की प्रतिबिम्ब को दर्शाता है | बैगा जनजाति की संस्कृति परम्परागत एवं प्राचीन है जो बैगा जनजाति को एक विशिष्ट पहचान दिलाती है ,वर्तमान में हम अपनी प्राचीन परम्पराओ एवं संस्कारो में आधुनिकता को समाहित करते जा रहे है वैसे ही बैगा जनजाति के लोग आज भी अपनी परम्परा एवं प्राचीनता को बनाये हुए आधुनिक एवं हिन्दू परम्पराओं को आंशिक मात्रा में सम्मिलित करते जा रहें है | चौरसिया (2009)3 बैगा जनजाति को प्राकृतिक पुत्र कहा है क्योंकि बैगा जनजाति प्राकृतिक के बहुत करीब होते है तथा पृथ्वी को अपनी माँ कहते है ,और पृथ्वी पर हल नहीं चलाते हैं | क्योंकि इनकी मान्यता है की हम अपनी माँ के सीने पर हल नहीं चलाते हैं ,इसके साथ ही बैगा जनजाति प्राकृतिक औषधियों जड़ी – बूटियों के बारे में अधिक जानकारी रखते हैं | बैगा जनजाति के लोग अपने स्वास्थ्य से सम्बंधित समस्यों का उपचार जड़ी –बूटियों एवं झाड़ –फुक से करते हैं |

शोध अध्ययनों की समीक्षा :- जैसा की हमें ज्ञात है की बैगा जनजाति देश की एक अत्यंत पिछड़ी जनजाति है, इनका रहन–सहन, स्वास्थ्य, शिक्षा पेयजल की समस्या, सामाजिक-आर्थिक स्थिति, परम्परागत चिकित्सकीय ज्ञान ने कई शोधार्थियों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है जिसमें मानवशास्त्री, समाजशास्त्री, अर्थशास्त्रीय एवं मनोवैज्ञानिक के द्वारा शोध अध्ययन किये है |प्रस्तुत शोध अध्ययन में पूर्व में किये गये शोध साहित्यों का पुनरावलोकन करने का प्रयास किया गया है जो निम्न है-

भागवत डी. (1957)[4] ने द करमा में करमा अनुष्ठान, नृत्य,गीत के साथ करमा नृत्य के विभिन्न रूपों का वर्णन किया है जिसमें इन्होंने करमा को गोंड संस्कृति का स्वदेशी हिस्सा नहीं माना है बल्कि कोलारियान या मुंडा संस्कृति का उत्पाद माना है | इन्होंने अपने अध्ययन में स्पष्ट किया है की बैगा,मझवार और सावर वे लोग है जो मुख्य रूप से करमा का अभ्यास करते है और बाकि जनजातियों ने उनकी नकल की है, इसके साथ ही यह भी कहा है की करमा नृत्य केवल बिलासपुर कि जनजातियों द्वारा मनाया जाता है जिसे पूर्वी अनुष्ठानों के साथ मिला दिया गया है | यह नृत्य पुरे प्रान्त एवं हिन्दुओं में बहुत ही लोगप्रिय है जिसे गोलाकार प्रदर्शन की तकनीक के आकार में भिन्न-भिन्न चरण में प्रदर्शन करते हैं |

भागवत डी. (1968)[5] ने जनजाति त्यौहार का उल्लेख करते हुए कहा की जनजातियां त्योहारों के लिए उतने ही शौकीन है जितनी हम है फिर भी वे हमसे कहीं अधिक बेहतर त्योहारों के बारे में जानते हैं कि उनका आनंद कैसे लेना है | जनजातियों में त्यौहार के अवसरों पर मदिरा अपरिहार्य है |वहां रात भर नाच-गाना चलता रहता है और स्त्री –पुरुष व्यवहार प्राय:असंमित रहता है जहाँ इनके त्योहारों का हिस्सा अश्लील इशारे और अश्लील गाने भी होते हैं | इनके कई अनुष्ठानों और रीति-रिवाजों जैसे विवाह, अत्येष्टि संस्कारों ,फसल उत्सव फाग और सुअर बलि आदि में ऐसे औपचारिक दुरुपयोग अपरिहार्य है | इसके साथ ही साथ जनजाति अपने समारोहों एवं त्यौहार में अपने कुल देवी-देवताओं को रक्त और शराब अर्पित करते है ,सभी जनजाति अपने इष्ट देवताओं को सुअर,बकरे,मुर्गी आदि चढ़ाते है |

1. रसेल हीरालाल (1936)[6] मध्य प्रदेश की जनजाति का सबसे पहली बार चार खंडो में क्रमबद्ध विवरण प्रकाशित “कस्टम एंड ट्राइब्स इन सेन्ट्रल प्रोविसेंज पुस्तक में किया |

2. एल्विन (1939)[7] ने ‘‘द बैगा’’में बैगा जनजाति को मिडिसिन में कहा है | उन्होंने बैगा जनजाति के वंश गोत्र समूह उत्पत्ति एवं सम्पूर्ण जीवन शैली का गहन अध्यन कर बताया की बैगा जनजाति जो है छत्तीसगढ़ में सबसे पहले छोटा नागपुर के रास्ते से प्रवेश किया था |जो वर्त्तमान में छत्तीसगढ़ राज्य के विभिन्न जिलो कबीरधाम, बिलासपुर, राजनांदगांव,कोरिया,मुंगेली आदि क्षेत्रो में निवास

करती है

3. कोठारी सी.आर.रिसेर्च मेथेडोलोजी (2004)[8] न्यू एज इंटरनेशनल पब्लिकेशन न्यु दिल्ली शोध अध्ययन को सुगम बनाने के लिए शोध से सम्बंधित विभिन्न आयाम एवं विषय से सम्बंधित महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त किया गया है |

4. अली सी.ए. (2011)[9] .ने FESTIVAL AS A SOURCE FOR RECONSTRUCTING TRIBAL ETHNOHISTORY: "THE NILAMBUR PAATTU.में केरल के मलपुरम ज़िले की नीलाम्बुर जनजाति जो नीलाम्बुर पश्चिमी घाटी में निवास करती है के द्वारा मनाये जाने वाले प्रसिद्ध त्यौहार नीलाम्बुर पाट्टू के अध्ययन के आधार पर स्पष्ट किया की स्थानीय त्यौहार को केवल मनोरंजन और पुजा का साधन न मानकर इसका उपयोग किसी क्षेत्र एवं उसके लोगों के जातीय इतिहास का पता लगाने के स्रोत में किया जा सकता है इन्होंने बताया की नीलाम्बुर पाट्टू त्यौहार नीलाम्बुर जनजाति की संस्कृति और परम्पराओं के कुछ पहलुओ को उजागर करने में सहायक है |

5. गुप्ता पारुल एवं डेविड अल्का (2017)[10] के शोध अध्ययन से बैगा जनजाति के पर्व –त्योहारों के महत्व एवं उनमें होने वाले परिवर्तन के बारे में प्राप्त हुई है |

6. कुमार गजेन्द्र (2020)[9] का बैगा जनजाति के सामाजिक सांस्कृतिक और आर्थिक अध्ययन से बैगा जनजाति की परम्पराओ, सामाजिक व्यवस्था ,शिक्षा की स्तर ,औषधि ज्ञान आदि की जानकारी प्राप्त होती है

अध्ययन का उद्देश्य :-

1. बैगा जनजाति की सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्थिति का अध्ययन करना |

2. बैगा जनजाति के प्रमुख तीज-त्योहारों का अध्ययन करना |

3.बैगा जनजाति के तीज-त्यौहार एवं बदलते प्रतिमान का अध्ययन करना

शोध पद्धति एवं उतरदाताओ का चयन | छत्तीसगढ़ राज्य में वर्तमान में कुल 33 ज़िलें हैं, इनमें से 06 जिलों कबीरधाम, बिलासपुर, कोरिया, राजनांदगांव मुंगेली एवं गौरेला पेंड्रा मारवाही में बैगा जनजाति निवास करती है | बैगा जनजाति निवासरत जिलो में से दो ज़िले कबीरधाम एवं मुंगेली का चयन उद्देश्य पूर्ण निदर्शन के माध्यम से किया गया है | चयनित ज़िलो में कुल 07 विकासखण्ड है इसमें बोडला, पंडरिया, कबीरधाम, सहस-लोहरा, मुंगेली, लोरमी तथा पथरिया प्रमुख है इसमें से 2 विकास खण्ड का उद्देश्यपूर्ण निर्देशन के द्वारा चयन किया गया है इनमें कबीरधाम से बोडला और मुंगेली जिला से लोरमी विकासखण्ड का चुनाव किया गया है | बोडला विकासखंड में कुल 182 गाँव और लोरमी विकासखंड में कुल 41 गाँव है जिसमें से दो गाँवो का चयन दूरी को आधार मानकर उद्देश्य पूर्ण निदर्शन के माध्यम से किया गया है | जिसमें दो गाँवो की दूरी विकासखंड मुख्यालय से 20-30 किलोमीटर तक एवं दो गाँवो की दूरी 30-50 किलोमीटर की दूरी तक लिया जाएगा | चयनित गाँवो में कुल 379 परिवार है जिसमें से अध्ययन हेतु **Krejcie and Morgan** सूची का प्रयोग करते हुए अधिकतम 265 परिवारों का चयन किया जायेगा एवं उत्तरदाताओं का चयन दैवनिदर्शन की लाँटरी प्रणाली से किया जाएगा | चयनित परिवार के मुखिया को अध्ययन इकाई के रूप में लिया जायेगा |

उतरदाताओ का चयन विवरण निम्नानुसार है-

क्रमांक	ज़िले का नाम	विकासखंड का नाम	वि.ख.से गाँव की दुरी	ग्राम का नाम	कुल परिवार की संख्या	चयनित परिवार की संख्या **70** प्रतिशत
1.	कबीरधाम	बोडला	20-30 कि.मी. तक	बोदलपानी	88	62
			30-50 कि.मी. तक	सोनवाही	124	86
2.	मुंगेली	लोरमी	20-30 कि.मी. तक	टिंगीपुर	74	52
			30-50 कि.मी. तक	सुरही	93	65
योग	02	02		04	379	265

तथ्यों का संकलन एवं उपकरण :- तथ्यों के संकलन हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक तथ्यों का प्रयोग किया गया है |प्राथमिक तथ्य संकलन हेतु साक्षात्कार निर्देशिका, डायरी का उपकरण के रूप में प्रयोग किया गया है ,इसके साथ ही समूहवार्ता ,अवलोकन पद्धति का भी प्रयोग हुआ है |द्वितीयक तथ्यों के संकलन हेतु विभिन्न शोध अध्ययन ,पत्र –पत्रिका ,शोध आलेख ,शासन द्वारा प्रसारित सूचनाओं,इन्टरनेट आदि का प्रयोग किया गया है |

बैगा जनजाति की सामाजिक सांस्कृतिक अध्ययन :- बैगा का अर्थ ओझा या शमन होता है, बैगा जनजाति के लोग झाड़ –फुक और अंध विश्वश जैसी परम्पराओं में अधिक विश्वाश करते हैं | बैगा जनजाति दुर्गम क्षेत्रो पहाड़ो जंगलो में प्राकृतिक के करीब निवास करते हैं, जो सामान्यत सावले रंग, मध्यम कद और गठिला शारीरिक बनावट के होते हैं, इनकी उत्पति से सम्बंधित कोई विशेष प्रमाणिक साक्ष्य उपलब्ध नहीं है | बैगा जनजाति के लोग परम्परागत रूप से संयुक्त परिवार में रहना पसंद करते हैं, लेकिन वर्त्तमान में सरकारी योजनाओं के लाभ से वंचित होने के डर से स्वयं को एकाकी परिवार बताते है परन्तु वास्तविक रूप में वे वर्तमान समय में भी ज्यादातर संयुक्त परिवार में ही रहते हैं एक परिवार में करीब 8-10 सदस्य होते हैं जिसमें औसतन एक परिवार में 3-4 बच्चे होते है | बैगा जनजातियो में गाँव के मुखिया को मुक्कदम, दीवान या समरथ कहा जाता है ,जो अनुभवी और वृद्ध व्यक्ति होते हैं इनकी स्थिति समाज में ऊच्च होते हैं जिनका सभी लोग सम्मान करते हैं | गाँव में किसी भी प्रकार के सामाजिक ,पारिवारिक विवादों का निपटारा मुक्कदम द्वारा किया जाता है | बैगा जनजाति के परम्परागत मकान का स्वरूप कच्चा होता है जो प्राय :लकड़ी,बांस घास और मिट्टी के बने होते हैं ,वर्तमान में आधुनिकता के कारण या सरकारी योजनाओं के कारण कुछ लोगो की मकान का स्वरुप पक्के भी देखने को मिलता है | बैगा जनजाति की व्यवसाय मुख्य रूप से झूम खेती एवं शिकार करना है ,इसके साथ –साथ वनोपाज संग्रह ,पशुपालन तथा ओझा का कार्य करते है | बैगा जनजाति की प्रमुख भाषा बैगानी है, भाषा की दृष्टि से बैगाओ ,में एकरूपता नहीं पाई जाती है,अनेक भाषा समूह से सम्बंधित होने के कारण बैगा जनजाति के लोगो द्वारा अपनी मूल भाषा बैगनी के साथ -साथ छत्तीसगढ़ी, बघेली, गोड्वानी, मराठी आदि भाषाओं का भी प्रयोग करते है, बैगा जनजाति द्रविड़ भाषायी परिवार में आते हैं |

बैगा जनजाति सामाजिक रूप से अत्यंत पिछड़ी जनजाति मानी जाती है,लेकिन सांस्कृतिक रूप से इन्हें समृद्ध मन जाता है | बैगा जनजाति की संस्कृति बहुत ही प्राचीन एवं परम्परागत है जो इन्हें एक विशेष पहचान दिलाती है,बैगा जनजाति एक गोदना प्रिय जनजाति है जो श्रृगार के तौर पर बैगा महिलाए अपने शारीर पर गोदना बनवाते है गोदना को लेकर इनकी मान्यता होती है यदि हम जीते जी अपने जीवन में गोदना न गोदवाये तो मरने क बाद भगवान सबल से गोदना गोदते है बैगा जनजाति द्वारा विभिन्न अवसरों जन्म, विवाह, उत्सव आदि में नृत्य करते है | बैगा जनजाति द्वारा की जाने वाली प्रमुख नृत्यों में करमा नृत्य,

(करमा पहाड़ी, करमा झुलनी, करमा लहकी)बिल्मा आदि है ,बिल्मा नृत्य बैगा जनजाति के युवा –युवतियों द्वारा टोली बनाकर दशहरे के दिन से प्रारंभ करते है जिसे 02-03 माह तक किया जाता है |

बैगा जनजाति त्यौहार :-

Bhagvat, D. (1968). Tribal Gods and Festivals in Central India. *Asian Folklore Studies*,[10] *में* जनजाति त्यौहार का उल्लेख करते हुए कहा की जनजातियां त्योहारों के लिए उतने ही शौक़ीन है जितनी हम है फिर भी वे हमसे कहीं अधिक बेहतर त्योहारों के बारे में जानते हैं कि उनका आनंद कैसे लेना है | जनजातियों में त्यौहार के अवसरों पर मदिरा अपरिहार्य है |वहां रात भर नाच-गाना चलता रहता है और स्त्री –पुरुष व्यवहार प्राय:असंमित रहता है जहाँ इनके त्योहारों का हिस्सा अश्लील इशारे और अश्लील गाने भी होते हैं | इनके कई अनुष्ठानों और रीति-रिवाजों जैसे विवाह, अत्येष्टि संस्कारों ,फसल उत्सव फाग और सुअर बलि आदि में ऐसे औपचारिक दुरुपयोग अपरिहार्य है | इसके साथ ही साथ जनजाति अपने समारोहों एवं त्यौहार में अपने कुल देवी-देवताओं को रक्त और शराब अर्पित करते है ,सभी जनजाति अपने इष्ट देवताओं को सुअर,बकरे,मुर्गी आदि चढ़ाते है |

बैगा जनजाति के प्रमुख त्यौहार:-

1) आठ साल नौ कार्तिक या रसनवा:- बैगा जनजाति में यह त्यौहार आठ साल में एक बार मनाया जाता है | आठ कुवांर गुजरने के बाद नौवे कार्तिक माह में मोहती की पौधा उगने की खुशी में यह पर्व मनाया जाता है , इनकी मान्यता है की मोहती का पौधा आठ साल में एक बार उगता है | इस त्यौहार को मनाने के लिए इस दिन जंगल से मोहती डाल को कटकर लाया जाता है और इसे आँगन में गाडा कर छोटे –छोटे 3-4 कमरे बनाते है,जिसमे विशेष पूजा की जाती है |और साथ में बांस भी काट कर लाते है जिसका बर्तन बनाते है और उसी बर्तन में कुटगी को मधुरस के साथ मिला कर खीर बनाते है जिसे मोहती पत्ते के बने दोने से रखते है जिसका पूजा करते है | पूजा करने के बाद इस खीर को केवल कुंवारी –कुंवारा युवा युवती खाते है, तथा इस पूजा में नौव लड़के लड़की की आवश्यकता होती है लेकिन बने खीर जिसे केनवा कहा जाता है ,को सभी अविवाहित लोग खाते है |

2) जवारा पर्व :- जवारा पर्व को बैगा जनजाति में देवी पर्व के रूप में मनाया जाता है |इस त्यौहार या पर्व को चैत से जेठ माह तक और कुवार माह में मनाया जाता है ,इस पर्व में खैर माई की पूजा की जाती है प्रारम्भ में नई टोकनी या खप्पर में गेहूं के बीज को बोये जाते है जिसे जवारा बोना कहते है | जवारा जो है खैर माई के पूजा स्थल के साथ – साथ ,अपने – अपने निजी घरो में भी बोये जाते है , नवे दिन नाचते – गाते नाकड़ा ढोल जुलुस के साथ जवारे को नदी में विसर्जन करते है | उसके बाद देवी – देवताओ को बकरा , काली मुर्गी , नारियल आदि की बलि देते है , और बलि स्वरुप दी गई बकरा ,मुर्गी आदि को आपस में बाटकर खाते है |

3) छाया धरना :- हिन्दू धर्म में पितृ मोक्ष के लिए पितृ विसर्जन का त्यौहार मनाया जाता है वैसे ही बैगा जनजाति में भी साल में एक बार अपने पितरो का स्मरण किया जाता है | यह त्यौहार बैगा जनजाति द्वारा जेठ माह के शुक्ल पक्ष के सोमवार , बुधवार और शुक्रवार को मनाया जाता है इस दिन बैगाओ के देवी – देवताओं के लिए विशेष दिन होता है | सभी समान गोत्र के बैगा परिवार एक – एक मुर्गी इक्ट्ठे करते है और उसे अपने पूर्वजो को बलि के रूप में अर्पित करते है जिसे उसी गोत्र के लोग आपस में बाटकर खाते है |

4) बिदरी :- यह त्यौहार अक्ती (अक्षय तृतीया) के दिन मनाया जाता है इस पर्व में बीज बोने से पहले अच्छी फसल की कामना से बीजो की पूजा की जाती है जिसे बिदरी कहा जाता है , इस दिन अच्छी फसल के कामना के साथ इनके फसलो को कोई भी पशु – पक्षी नष्ट न करे इस कामना से बिदरी पर्व का आयोजन करते है बीज बोने से पहले प्रत्येक घर में जो मुखिया होता है वह महलोंन के पते से बने दोने मे बोये जाने वाले बीज को ठाकुर देव के स्थान पर लेकर जाते है | जिसका देवार (पुजारी) पूजा करता है पूजा स्थान पर सभी लोग अपने द्वारा लेकर गए अनाज / बीज को इक्कठा करते हैं उसके बाद ठाकुर देव में मुर्गी की बली दी जाती है और उसी मुर्गी के खून को अनाज / बीज में मिला दिया जाता है उसके बाद खून से सनी बिज को सभी बैगा कृषक को दिया जाता है जो घर आने के बाद उसमें बोये जाने वाले बीजों को और मिला देते हैं | इस त्यौहार में महिलाये भाग नहीं लेती है |

5) हरेली :- यह पर्व हिन्दू धर्म के अमुरूप सावन अमावस्या के दिन बैगा जनजाति द्वारा मनाया जाता है इस दिन घर की लिपा – पोती की जाती है तथा घर का मुखिया या बुजुर्ग व्यक्ति सबेरे उठकर जंगल से भीलवा की डाल,जोगी लटी,हसिया डाफर तथा भवर माल की डालिया को काटकर लाते है नहाने के बाद सभी को मिलाकर छोटे – छोटे डंठल घर के दरवाजे और जानवर रखने के स्थान , खेत आदि में डाल को खोसता है तथा नेक भी लेता है | यह त्यौहार अच्छी भरपूर फसल के लिए होती है,बैगा जनजाति द्वारा इस दिन अच्छा भोजन तेल रोटी,बाजरा बनाते है तथा खेत में ले जा कर अपने खेति डोली से सम्बंधित देवी देवताओं की अच्छी फसल की कामना से पुजा आराधना करते हैं |

6) नवाखाई / नवफसल :- नवाखानी फसल कटाई का पर्व है , बैगा जनजाति के लोगो द्वारा अपने देवी – देवताओ की कृत्यज्ञता के लिए इस पर्व को मनाते है | बैगा जनजाति में मान्यता है की वे नई फसल का भोग पहले अपने देवी – देवताओं और पितरो को लगाते है | उसके बाद ही नई फसल का उपभोग करते हैं , यह पर्व खरीफ (स्याली फसल) में मनाई जाती है | नवाखाई पर्व मनाने के एक दिन पहले घर का बुजुर्ग व्यक्ति अपने सभी देवी – देवताओं एवं पूर्वजो को नवा खाने का निमंत्रण देते हैं , तथा उनके स्वागत के नाम पर ककड़ी फूल या तिराइ (तोरई) फूल आदि को तोड़कर डेहनी एवं चौका (पूजा करने का स्थान) में रखते है | इस दिन बने भोजन में नया अनाज मिलकर बनाते है | इस दिन घर में आटे का चौक पुरकर दिया अगरबत्ती कर बने भोजन का देवताओं एवं पूर्वजो को अर्पित करते है | बैगा जनजाति द्वारा नवाखाई त्यौहार को मक्का नवाखाई,रवास नवाखाई,भाजी नवाखाई,कांग नवाखाई (कोदो,कुटकी,सांवा) आदि विभिन्न स्वरूपों में मनाया जाता है |

7) दशहरा :- बैगा जनजाति द्वारा दशहरा का त्यौहार हिन्दू धर्म के अनुरूप कुवार शुक्ल दशमी को मनाया जाता है |दशहरा पर्व को बैगाओ का नृत्य आरम्भ करने का पर्व कहा जाता है हिन्दू दशहरा का दिन तिथि समान है लेकिन इनका आपस में कोई संबंध नहीं होता है | दशहरा पर्व के रूप में बैगा जनजाति अपनी रक्षा की देवी खैर माता की नारियल अगरबती एवं धुप से पुजा आराधना करने के बाद रमतिला का फुल अर्पित करते है जिसे फुल चढ़ाना कहा जाता है इस दिन के बाद से बैगा जनजाती में कर्मा नृत्य प्रारम्भ होता है तथा इसी दिन से बैगा समुदाय के लोग कोठार बनाना प्रारंभ करते है खैर माता से फसल की सुरक्षा की आशीर्वाद लेकर |

8) देवारी :- बैगा जनजाति की परम्परागत पर्व नहीं है ,बल्कि यह हिन्दू समाज के देखा-देखि मनाने वाला पर्व है | इस दिन बैगा समुदाय के लोग मिट्टी या चावल आटे का दीया बनाते है चावल आटे के बने दिया को भाप में पकाते है तथा उसमें तेल या घी डाल कर प्रज्वल्लित कर अपने देवी-देवताओं के सामने रखते है एवं आटे से बने दीया को खाया जाता है | इसी दिन बैगा जनजाति के लोग बच्चे की अच्छी स्वास्थ्य की कामना से घी के दिए से बच्चों के पेट को डाभा जाता है | तथा दिवाली के दिन बैगा जनजाति अपने पालतू पशु गाय एवं बैलो को कुम्हड़ा भात या खिचड़ी भात खिलाते है,शाम को जंगल से लौटी गाय एवं बैलो का मुंह धुलाते है ,उसके बाद गायो को कुम्हड़ा भात नई सुपा में खिलते है, यदि गाय –बैलो की संख्या अधिक होती है तो खाट में केला पान बिछा कर खिलाया जाता है और रात में परिवार के सभी लोग दाल-भात खाते है |

9) छेरता :-यह पर्व बैगा जनजाति द्वारा भी पौष पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है जो विशेष रूप से बच्चो का पर्व है | परन्तु इस त्यौहार को मनाने के तौर तरीके बैगा समुदाय में अलग है पौष पूर्णिमा के दो – तीन दिन पहले से बैगा जनजाति के बच्चे घर – घर जा कर अनाज, नमक, मिर्जी आदि खाद्य सामग्री का मांग करते है जिसे छेरता कहते है | छेरता से प्राप्त सभी सामग्री को नदी किनारे झिरिया किनारे या घर के बहार बाड़ी में जा कर पकाते है ,और वही से खाना पीना करके वापस घर लौट आते है | वर्तमान में बैगा बच्चों द्वारा छेरता से प्राप्त अनाज को कुछ मात्रा में दुकानों में बेचा जाता है और जरुरत की समान ख़रीदा जाता है |

10) फाग :-होली पर्व को बैगा जनजाति फाग पर्व के रूप में फागुन पूर्णिमा के दिन मनाते हैं | पूर्णिमा के दो –चार दिन पहले जंगल से लकड़ी कट कर लाते है और गाँव के बहार स्थान पर गाडा जाता है लकड़ी गाड़ने से पहले गड्ढ़े में मुर्गी का अंडा, अगुली का छल्ला तांबे का और पैसा डाला जाता है उसके बाद रात भर गाड़े गए लकड़ी के चारो –ओर फाग गीत गाकर नाचते है और मदिरा का सेवन करते है उसके बाद सुबह चार बजे पूर्णिमा की रात अंतिम पहर में गाँव का मुखिया होली दहन करता है | होली के दिन एक छोटा बैल गाड़ी बनाया जाता जिसमें लाल,काला और सफ़ेद रंग का ध्वजा लगाया जाता है तथा गाँव के पटेल द्वारा पूजा-पाठ इस उद्देश्य से किया जाता है गाँव एवं घरो में जो भी बीमारी है वह दूर हो जाये और गाँव में ऐसी बीमारी फिर न आये इसी उद्देश्य बैलगाड़ी और एक जीवित मुर्गी गाँव से बहार सूर्य उदय से पहले पूर्व दिशा में छोड़ा जाता है और पांच मुर्गी की बलि दिया जाता है | होली का प्रारंभ होली दहन की राख को एक दुसरे को लगा कर करते है | बैगा जनजाति

के लोग परम्परागत रूप से रंग के रूप में पलास फुल को पानी में उबाल कर करते थे,वर्तमान में विभिन्न प्रकार के रंग एवं गुलाल का प्रयोग किया जाता है |

बैगा जनजाति के तीज-त्यौहार एवं बदलते प्रतिमान

बैगा जनजाति उत्सव धर्मी एवं प्राकृतिक प्रेमी होते है इनके समुदाय से सम्बंधित विभिन्न त्यौहार प्राकृतिक से सम्बंधित होते है अपने जीवन से जुड़े प्रत्येक त्यौहार को प्राकृतिक के संदर्भ में मानते है और अपने जीवन को खुशियों से उत्साहित करते है फसल बोवाई से लेकर फसल कटाई तक इनके समुदाय में विभिन्न त्योहारों जैसे बिदरी, नवाखाई, रसनवा,छेरता रोपा ओसराना आदि का आयोजन करते है और इनके माध्यम से अपनी समुदाय की परम्परागत सांस्कृतिक व्यवहारों को पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित कर संरक्षित करते है तथा नई पीढ़ी को इन व्यवहारों से अवगत कराते है | बैगा समुदाय का इन त्यौहारो के वजह से एक अलग अस्तित्व है जो इन्हें सांस्कृतिक रूप से समृद्ध बनती है,तथा इनके समुदाय के लोगो में प्राकृतिक के प्रति आदर की भावना को जागृत करती है जो पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देती है सांस्कृतिक संक्रमण एक समाजशास्त्रीय अवधारणा है | बैगा जनजाति समुदाय के लोग वर्त्तमान में आधुनिकता और नगरीकरण के प्रभाव तथा बाहय लोगो के संपर्क में आने के कारण अपनी परम्परागत सांस्कृतिक व्यवहारों,तीज-त्योहारों, खान-पान, रहन-सहन आदि में बाहय लोगो की संस्कृति को आत्मसात करते जा रहे है |जिसके कारण से इनकी परम्परागतगत संस्कृति के साथ साथ जन सामान्य की संस्कृति भी सम्मिलित होती जा रही है | एम.एन.श्रीनिवास ने अपने संस्कृतिकरण की अवधारणा में बताया की निम्न जाति के लोग उच्च जाति की जीवन शैली एवं कर्म कांड को अपनाते है वैसे ही बैगा जनजाति समुदाय के लोगो द्वारा अपने सांस्कृतिक रीति-रिवाज कर्म-कांड आदि में जन सामान्य की संस्कृति को अपनाते जा रहे है जिससे बैगा जनजाति समुदाय की परम्परागत सांस्कृतिक अस्तित्व संक्रमित हो रही है और इनकी सांस्कृतिक समृद्धि में कुछ मात्रा में परिवर्तन हो रहा है | अध्ययन में कुछ बैगा जनजातिय के नौकरी प्राप्त युवा जो निकटस्थ क्षेत्रो में निवासरत है के साक्षात्कार उपरांत यह तथ्य प्राप्त हुआ की आर्थिक रूप से सक्षम होने के उपरांत एवं अपने समुदाय से दूर रहने के कारण ये अब अपने सामुदायिक पर्वो में उपस्थित नहीं हो पा रहें है और कुछ त्योहारों की मुलभुत मान्यताओ जिसे हम इथोज कहते है को वे भूलते जा रहें है | हालांकि बैगा जनजाति विशेष पिछड़ी जनजाति है एवं समुदाय में साक्षरता एवं आर्थिक रूप से सक्षम लोगो की कमी है परन्तु इनमें से जो भी युवा अपने समुदाय से रोजगार हेतु दूर होते हैं उनमें इस प्रकार की जानकारी प्राप्त हुई है | अत:वर्तमान परिपेक्ष्य में बैगा जनजाति के सांस्कृतिक विशेषता को बनाये रखने हेतु परम्परागत पर्वो का आयोजन निरंतर होना अत्यंत आवश्यक है |

निष्कर्ष:-

प्रस्तुत शोध पत्र छ.ग.राज्य की विशेष रूप से पिछड़ी जनजाति बैगा के प्रमुख तीज त्यौहार एवं बदलते प्रतिमान का एक नृजातीय अध्ययन पर आधारित है |बैगा जनजाति छ.ग.में मुख्य रूप से छ: जिलो कवर्धा,कोरिया,मुंगेली,बिलासपुर गौरेला पेंड्रा मरवाही एवं राजनान्दगावं में निवास करती है | बैगा जनजाति समुदाय में परम्परागत पर्वो का अत्यंत महत्त्व है वर्ष भर बैगा जनजाति के लोग विभिन्न अवसरों पर पर्वो को परम्परागत रूप से मनाते है बैगा जनजाति के प्रमुख पर्वो के नाम जवारा पर्व ,रसनवा,बिदरी,छेरता,फाग,नवाखाई,देवारी दसहरा,हरेली,छाया धरना आदि है |बैगा जनजाति समुदाय में विभिन्न पर्वो के मनाये जाने के पीछे कुछ विशेष मान्यताये होती है जिसे वैज्ञानिक रूप से इथोज की संज्ञा दी गई है |इथोज संस्कृति के भावनात्मक अथवा सैद्धान्तिक पक्ष को कहा जाता है |इस शब्द का सर्व प्रथम प्रयोग प्रो.A.L.क्रोबर ने किया था |प्रत्येक जनजातिय पर्वो को मनाये जाने के पीछे कुछ मान्यताये होते है एवं जनजातिया इन्ही मान्यताओ के अनुरूप परम्परागत रूप से विभिन्न पर्वो को मनाते है | बैगा जनजाति के विभिन्न पर्व नियत तिथियों पर आयोजित होते है एवं सभी पर्वो के मनाये जाने की विधिया एवं देवी-देवता भी पर्व के अनुसार अलग-अलग होते है | जनजाति पर्व भी जनजातिय समुदाय की संस्कृति का अभिन्न अंग रहा है एवं इनके मनाए जाने के तरीके एवं रीतिरिवाज पर्वो के अवसरो पर गाए जाने वाले गीत एवं नृत्य तथा वाद यंत्र भी अवसर अनुसार भिन्न भिन्न प्रकार के होते है |बैगा जनजाति में भी विभिन्न पर्वो के लिए पृथक-पृथक गीत,नृत्य एवं व्यंजन आदि का विशेष महत्त्व होता है क्रोबर के अनुसार संस्कृति के व्यवहारिक एवं बाहय पक्ष को इडोज कहा जाता है तथा इडोज का संचालन एथोज (भावनात्मक पक्ष)के अनुरूप होते है |बैगा जनजाति समुदाय में भी विभिन्न पर्वो के आयोजन में एथोस एवं एडोस गुण परिलक्षित होते है एवं वर्तमान परिपेक्ष्य में बैगा जनजाति के सांस्कृतिक विशेषता को पृथक पहचान दिलाने में इन परम्परागत पर्वो का विशेष महत्त्व दिखाई पड़ता है |ये पर्व समुदाय के अस्तित्व को बनाये रखने में सहयोग प्रदान करते है |प्रस्तुत अध्ययन में यह भी पाया गया है की बैगा समुदाय के कुछ लोग जिनकी संख्या नगण्य के समान है जब अपने समुदाय से पृथक रोजगार हेतु अन्यत्र निवासरत रहते है तो वे सभी प्रकार के सामुदायिक पर्वो में उपस्थित नहीं हो पाते एवं साथ ही वे धीरे-धीरे उन पर्वो की मान्यताओ को भी भूलते जा रहे हैं | अध्ययन में यह तथ्य भी पाया गया की बैगा समुदाय के निकटवर्ती हिन्दू समुदायों के साथ संपर्क होने के कारण हिन्दू पर्वो जैसे दिपावली एवं होली, रक्षा बंधन,दसहरा आदि पर्वो का आयोजन बैगा जनजाति समुदाय द्वारा किया जाता है तथा वे अपने परम्परागत पर्वो को भी यथावत मना रहे है |

अत:प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है चुकी मानवीय समुदाय के अस्तित्व के लिए संस्कृति का संरक्षण अत्यंत आवश्यक है उसी प्रकार बैगा जनजाति की भी विशेष पहचान उसकी पृथक संस्कृति के कारण दिखाई पड़ती है एवं बैगा जनजाति के परम्परागत पर्व इस

REFERENCES

1. Russel & Heeralal. (1916). *The Trible And Cast Of The Central Probation Of India.* Landan: Macmillan Publication.pp.323-331

2. Elvin, V. (1939). *The Baiga.* New Delhi: Gyan Publication.pp519

3. Kaufmann, W. (1941). Folk-Songs of the Gond and Baiga. *The Musical Quarterly*, *p* . 280–288.

4. Krober,A.L.. (1948). *Anthropology.* New York: Harcourt Brace & Co.pp.255

5. Bhagvat, D. (1968). Tribal Gods and Festivals in Central India. *Asian Folklore Studies*, *p*.27–106.

6. कोठारी सी .आर .रिसर्च मेथटोलोजी(2004) न्यु एज इंटरनेशनल पब्लिकेशन न्यु दिल्ली

7. चौरसिया वि.कु. प्राकृतिक पुत्र बैगा (2009)हिंदी ग्रन्थ अकादमी,भोपाल पृ.1-8

8. Ali C.A., F. (2011). FESTIVAL AS A SOURCE FOR RECONSTRUCTING TRIBAL ETHNOHISTORY: “THE NILAMBUR PAATTU.” *Proceedings of the Indian History Congress*, p.1377–1386

9. गुप्ता पारुल एवं डेविड अलका (2017) इंटरनेशनल जनरल आफ अकादमिक रिसर्च एंड डेवलपमेंट |